Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 9 (September 2025) pp: 404-413
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले में मेलों और त्योहारों के ऐतिहासिक महत्व की खोज

Bandna Kumari* Dr. Ishan Khan** Dr. Irfan Ahmed***
**Bandna Kumari, Ph. D Scholar (History), Department of Humanities & Social Sciences, IEC University, Baddi (H.P) India-173205 (First Author)*
***Dr. Ishan Khan, Assistant Professor (History), University Institute of Legal Studies, Chandigarh University, Mohali (Punjab) India- (Second Author)*
****Dr. Irfan Ahmed, Assistant Professor (History), Department of Humanities & Social Sciences, IEC University, Baddi (H.P) India-173205 (Third Author)*

सारांश: *हिमाचल प्रदेश एक ऐतिहासिक राज्य है जहाँ आदिकाल से लेकर वर्तमान समय में पारम्परिक मेलों और त्योहारों ख्याति की रही है। हिमाचल प्रदेश अपने मेले और त्योहारों की वजह से विश्व में अपनी जगह बनाये हुए है। इस प्रदेश को ऋगवेदिक् काल से आधुनिक समय तक मेलों और त्योहारों में बहुत प्रसिधि प्राप्त है। हिमाचल प्रदेश का हमीरपुर अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के मामले में बेहद प्राचीन है। यह अपने मेलों और त्योहारों के लिए भी लोकप्रिय है। यहाँ के मेले और त्योहारों की ऐतिहासिक स्थिति भी भारत में लोकप्रिय रही है। इस शोध पत्र में शोधार्थी हमीरपुर का एक सामान्य परिचय देगा। इस शोध पत्र में हमीरपुर के विभिन्न स्थानों में आयोजित होने वाले ऐतिहासिक मेलों और त्योहारों का ऐतिहासिक परिपेक्ष में वर्णन करेगा। यह शोध पत्र हमीरपुर की सदियों से चली आ रही परम्परा और संस्कृति को दर्शायेगा। इस शोध पत्र में हमीरपुर के विभिन्न स्थानों में आयोजित होने वाले मेलों और त्योहारों का वर्णन भी किया जायेगा।*

महत्वपूर्ण विन्दु: *हिमाचल प्रदेश, हमीरपुर, ऐतिहासिक, मेले, त्योहारों, महत्व*

*Received 15 Sep., 2025; **R**evised 25 Sep., 2025; **A**ccepted 28 Sep., 2025 © The author(s) 2025.*
P**ublished with open access at **www.questjournas.org

हमीरपुर का ऐतिहासिक परिचय

जिला हमीरपुर का इतिहास चन्द्रवंषीय कटोच शासकों से सम्बन्धित है। जिसने हमीरपुर क्षेत्र पर सबसे अधिक समय तक शासन किया है। कटोच वंषीय राजा हमीरपुर ने क्षेत्र में विशेष रूचि दिखाई। किंवदतियों के अनुसार उस समय इस क्षेत्र में कई छोटी-2 रियासतें थी। राजा हमीरचन्द ने इन रियासतों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। नादौन तथा सुजानपुर क्षेत्र पहले ही कटोच शासकों के शासन के अन्तर्गत् था। किसी भी स्थान के नामकरण के साथ कोई न कोई ऐतिहासिक या पौराणिक घटना जुड़ी रहती हैं। राजा हमीरचन्द आलमपुर की राजगद्दी पर बैठा। उसने 1700 से 1747 ई॰ तक 47 वर्षों तक राज्य किया। राजा हमीरचन्द ने जिला हमीरपुर के मुख्यालय हमीरपुर नगर को बसाया। है। अतः राजा हमीरचन्द के नाम से ही इस स्थान का नाम हमीरपुर पड़ा है। यहां हथली खड्ड के ऊपर दो सड़का के पास ‘सुंड़कर’ की पहाड़ी पर राजा हमीरचन्द के महल थे। हथली खड्ड के पास राजा के हाथी की गजशाला थी और घुनाल में इनकी घुड़शाला होती थी। इस

जगह आज भी एक तालाब विद्यमान है। कहा जाता है कि इस तालाब में राजा के घोड़े पानी पीते थे। हमीरपुर के नामकरण के रूप में राजा हमीरचन्द द्वारा निर्मित किले का उल्लेख किया जाता है। राजा हमीर चन्द का यह किला हमीरपुर नगर से चार कि॰ मी॰ दूर दुलेड़ा गांव के साथ है। यहां पर एक स्थान है 'गढ़ा॰ रा 'रिढ़ा॰ जिसका अर्थ है किले वाली पहाड़ी। अतः गढ़ा रा रिढ़ा स्थान नाम से स्पष्ट हो जाता है कि राजा हमीरचन्द द्वारा निर्मित किला यहीं पर था। उक्त किले के कारण ही इस स्थान का नाम हमीरपुर पड़ा।

हमीरपुर प्राचीन काल से ही कांगड़ा क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण उपमण्डल रहा है। कटोच वंशी शासकों को कई आक्रमणकारियों के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। सबसे पहले महमूद गजनवी ने 1009 ई॰ में (नगरकोट कांगड़ा) पर आक्रमण किया और सम्पूर्ण कांगड़ा व हमीरपुर के नगरों को रौंदता हुआ यहां के दुर्गों व मन्दिरों से अपार धन सम्पति लूट कर गजनी ले गया। महमूद गजनवी के आक्रमण के बाद इस क्षेत्र पर इतना भयानक कोई भी आक्रमण नहीं हुआ।

राजा हमीर चन्द ने अपने शासन काल (1700.1747 में मुगलों से दुर्ग को मुक्त करवाने के लिए संघर्ष किया। परन्तु सफलता नहीं मिली। 1747 ई॰ में हमीर चन्द की मृत्यु हो गई। राजा हमीर चन्द की मृत्यु के पश्चात उसका बेटा अभयमान चन्दए जो इतिहास में अभय चन्द के नाम से जाने जाते हैं। इनका शासन काल 1747 से 1750 ई॰ तक रहा। राजा अभयमान चन्द ने वर्तमान जिला हमीरपुर के सुजानपुर टीहरा के पास एक किला बनवाया था। हिस्ट्री आफ पंजाब हिल स्टेटस के अनुसार इस किले का निर्माण 1748 ई॰ में किया गया था। अभयमान चन्द के इस किले के कारण ही यह स्थान अभयमानपुर कहलाया। बाद में सन् 1749 ई॰ में यह किला गिरा दिया गया था।

राजा अभयमा चन्द के बाद इस क्षेत्र का प्रसिद्ध राजा घमण्ड चन्द हुआ। घमण्ड चन्द ने 1751.1765 ई॰ तक शासन किया। राजा घमण्ड चन्द ने ब्यास नदी के किनारे सुजानपुर नामक कस्बे की स्थापना की और इस स्थान को अपनी गतिविधियों का प्रधान स्थान बनाया। यहां पर उन्होंने कई भव्य भवनों का भी निर्माण करवाया। यह समस्त क्षेत्र वर्तमान हमीरपुर जनपद के अन्तर्गत आता है। राजा घमण्ड चन्द का पौत्र संसार चन्द कटोच वंशावली का सबसे प्रसिद्ध शासक सिद्ध हुआ। संसार चन्द 1775 ई॰ में गद्दी पर बैठा। राजा संसार चन्द कला प्रेमी था तथा कलाकर और विद्वानों का बहुत आदर करता था। उन्होंने देश-विदेश के कलाकारों को आमंत्रित किया तथा उन्हें सम्मानित करके अपने राज्य में बसाया। संसार चन्द के समय में विश्व प्रसिद्ध कांगड़ी चित्रकला अपने विकास की चरम सीमा पर पंहुची। कांगड़ा नादौन सुजानपुर-टीहरा जैसे ऐतिहासिक स्थलों पर आज भी कांगड़ा शैली की उत्कृष्ट कृतियां सुरक्षित है।

लेकिन राजा संसार चन्द अत्यन्त महत्त्वकांशी राजा था। राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा उसके पतन का कारण बनी। राजा संसार चन्द ने पहाड़ी रियासतों पर अपना अधिकार करना आरम्भ कर दिया। उसने मण्डी के राजा को पराजित करके वहां के राज्य पर अधिकार कर लिया और मण्डी के राजा ईश्वरसेन को 12 वर्षों तक नादौन में बन्दी बना दिया। 1783 ई॰ मं बिलासपुर के कुछ क्षेत्र को जीत कर संसार चन्द ने अपने अधिकार में ले लिये। इससे दुखी होकर पहाड़ी राजाओं ने मिलकर अमरसिंह थापा को संसार चन्द पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। बाद में राजा संसार चन्द तथा गोरखा सेनापति अमरसिंह थापा की सेनाओं में महल-मोरियां नामक स्थान पर 1806 ई॰ मं युद्ध हुआ। यह महल मोरियां किला एक ऊँचे टीले पर स्थित है। किले के पूर्व दिशा में कुणाह खड्ड बहती है जो महल गांव को किले से अलग करती है। महल मोरियां किले का निर्माण विशेष रूप से युद्ध काल के लिए ही हुआ था क्योंकि मण्डी रियासत और बिलासपुर की सीमा थोड़ी दूर पड़ती थी। इस किले की देख-रेख के लिए यहां बजीर रहते थे। इन बजीरों के परिवार आज भी हमीरपुर से 28 कि॰ मी॰

दूर बड़ैहर गांव में बड़ी शानो-शौकत से रहते हैं। यह महल मोरिया किला गोरखा युद्ध का साक्षी रहा है।
गोरखों ने यहां बड़ी तबाही मचाई थी जिसके बारे में लोग यहां आज भी चर्चा करते हैं। यही नहीं सिक्खों के आक्रमण भी लोगों को याद है। 90 वर्षीय नन्द लाल मिश्रा दियोट (ताल) ग्राम निवासी ने अपने घर में वह खातियां बन्द की हैं जिनमं लोग अपना सामान छिपा कर जंगल भाग जाते थे या किले में शरण ले लेते थे। यह सब सिक्खों की लूटपाट के कारण होता था। उन खातियों को ऊपर से एक बड़े पत्थर से बन्द कर देते थे जिससे यह मालूम न हो कि इसके नीचे कुछ है। खातियों का मुँह छोटा होता था और अन्दर से नीचे तक सामान रखने के लिए खुली होती थीं।

आजकल यह किला मात्र खण्डहर है जिसकी जमीन भेड़ प्रजनन केन्द्र के अन्तर्गत है। किले का मुख्यद्वार दक्षिण दिशा में है जहां सुरक्षा चैकी वर्तमान मं भी विद्यमान हैं इसकी दीवारें 2 फीट से 3 फीट तक मोटी हैं। किले के अन्दर जाने के लिए कम चैड़ा मार्ग रखा गया है। पूर्व दिशा की दीवार तोपें चलाने के स्थान सभी विद्यमान हैं। किले का उत्तरी किनारा ढ़ह जाने के कारण बनाया गया है। किले की लम्बाई 250 फीट तथा चैड़ाई 100 फीट है किले की ऊँचाई समुद्र तल से 920 मी॰ है।

राजा संसार चन्द ने महल तथा साथ लगते महल से गांवों में सभी प्रकार के काम करने वाले लोगों को बसाया था। आवाज लगाने वाले बुटाल मसन्द खाना बनाने वाले बौहरे व्यापार करने वालेए पण्डित जुलाहा मिट्टी व बांस के बर्तन चर्मकार आदि कामगार लोग यहां बसाये गए थे। जो आज भी अपने परम्पारिक व्यवसायों के साथ यहां के स्थानीय निवासी हैं।

जब गोरखा युद्ध में महाराजा संसार चन्द पराजित हुए तो उन्होंने इस किले को छोड़कर नादौन के किले में शरण ली। बाद मं राजा गोरखों के विरूद्ध महाराजा रणजीत सिंह से सहायता मांगी। रणजीत सिंह ने कांगड़ा पर आक्रमण करके गोरखों को परास्त किया। इसके बदले में राजा संसार चन्द को कांगड़ा का दुर्ग तथा गांव रणजीत सिंह को देने पड़े। राजा संसार चन्द हताश होकर नादौन लौट आया जहां उनकी मृत्यु हो गई और स्वतन्त्रता प्राप्ति तक यह क्षेत्र अंग्रेजों के ही अधीन रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त हमीरपुर क्षेत्र को कांगड़ा मंडल का प्रान्त बनाया गया। 1 सितम्बर 1972 को हिमाचल के जिलों का पुनर्गठन के फलस्वरूप हमीरपुर को एक अलग जिला बना दिया गया।

हमीरपुर के पारम्परिक मेले व त्यौहार

हमीरपुर के पारम्परिक मेले और त्योहार की परम्परा अति प्राचीन है। प्राचीन भारत ग्रन्थों में मेले और त्योहारों का उल्लेख मिलता है। कुछ मेले लोक गाथाओं से जुड़े हुए हैं । लोक गाथाओं का इतिहास वैदिक काल से जोड़ा जा सकता है। प्राचीन साहित्य तथा वेदों से पता चलता है कि विभिन्न संस्कारों के अवसरों पर जो लोकगान होता था वह गाथाओं के नाम से प्रसिद्ध था। मेले और त्योहारों की परम्परा सामाजिक विकास की परम्परा के साथ निरन्तर विकसित होती है। मेले और त्योहारों से क्षेत्र से समृद्धि व संस्कृति की झलक मिलती है। हमीरपुर मं अनेक मेले व त्योहार हैं। जिनमें किसी राजा की वीरता का व्याख्यान होता है या देवाताओं के चमत्कारों की चर्चा होती है। हमीरपुर क्षेत्र में अनेक मेले व त्योहार हैं जो स्थानीय है। ये विभिन्न ऐतिहासिक सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं को दर्षाते हैं। षोध में हमीरपुर के कांगड़ा जिला को लिया गया है। क्योंकि कांगड़ा अति प्राचीन होने के नाते यहां के मेले व त्योहार पुराने हैं। हमीरपुर भी पहले कांगड़ा का ही अंग था इसलिए कांगड़ा जनपद में आने वाली संस्कृति से हमीरपुर प्रभावित हुआ है। यहां पर यह कहना भी

उल्लेखनीय होगा वर्तमान हमीरपुर जिला कांगड़ा का कभी हिस्सा हुआ करता था जिसके कारण हमीरपुर जिला की संस्कृतिए रीति-रिवाजों व मेलों व त्योहारों में कांगड़ा की झलक मिलती है।

हमीरपुर के पारम्परिक मेले और त्योहार की परम्परा अति प्राचीन है। प्राचीन भारत ग्रन्थों में मेले और त्योहारों का उल्लेख मिलता है। कुछ मेले लोक गाथाओं से जुड़े हुए हैं । लोक गाथाओं का इतिहास वैदिक काल से जोड़ा जा सकता है। प्राचीन साहित्य तथा वेदों से पता चलता है कि विभिन्न संस्कारों के अवसरों पर जो लोकगान होता था वह गाथाओं के नाम से प्रसिद्ध था। मेले और त्योहारों की परम्परा सामाजिक विकास की परम्परा के साथ निरन्तर विकसित होती है। मेले और त्योहारों से क्षेत्र से समृद्धि व संस्कृति की झलक मिलती है। हमीरपुर मं अनेक मेले व त्योहार हैं। जिनमें किसी राजा की वीरता का व्याख्यान होता है या देवाताओं के चमत्कारों की चर्चा होती है। हमीरपुर क्षेत्र में अनेक मेले व त्योहार हैं जो स्थानीय है। ये विभिन्न ऐतिहासिक सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं को दर्शाते हैं। शोध में हमीरपुर के कांगड़ा जिला को लिया गया है। क्योंकि कांगड़ा अति प्राचीन होने के नाते यहां के मेले व त्योहार पुराने हैं। हमीरपुर भी पहले कांगड़ा का ही अंग था इसलिए कांगड़ा जनपद में आने वाली संस्कृति से हमीरपुर प्रभावित हुआ है। यहां पर यह कहना भी उल्लेखनीय होगा वर्तमान हमीरपुर जिला कांगड़ा का कभी हिस्सा हुआ करता था जिसके कारण हमीरपुर जिला की संस्कृति रीति-रिवाजों व मेलों व त्योहारों में कांगड़ा की झलक मिलती है।

गुग्गा मेला

गुग्गा मेला हिमाचल प्रदेश के अनेक भागों मं मनाया जाता है। हमीरपुर मं गुग्गा त्योहार को एक अलग ही स्थान प्राप्त है। प्रतिवर्ष रक्षा बन्धन से लेकर गुग्गा अष्टमी तक हमारे यहां मनुष्यों की मण्डली निरन्तर गांव में गुग्गा गाथा गाकर फिरती है। मण्डली के मुखिया को स्थानीय भाषा में ‘चेला कहते हैं। जो लोहे की छड़ी जिस के ऊपर रंगी हुई ‘मौलियां बन्धी रहती हैं। लेकर मण्डली के साथ चलता है। एक आदमी कांसे की थाली बजाता है। जिसे ‘बैजन्तरी कहते हैं। बाकी सब के पास डमरू होते हैं। जब भी किसी घर में गुग्गा-मण्डली पंहुचती है तो चेला घर के दरवाजे के सामने छड़ी गाढ़ देता है। घर का एक आदमी थाली या छोटी टोकरी में प्रायः अनाज अथवा श्रद्धानुसार उसमें पैसे डालकर या कपड़ा आदि रख कर छड़ी के साथ रख देता है। यह गुग्गा गाथा आठ दिन तक गाई जाती है।

गुग्गा के जीवन सम्बन्ध में विभिन्न क्षेत्रों में कई लोक गाथाएं प्रचलित हैं। राणा गुग्गा मल राजस्थान की छोटी-सी रियासत मारू देश के शासक जवेर का बेटा था। काछल व बाछल दो बहने जबेर की पन्नियां थी। दोनों बहिनों के लम्बे समय तक कोई सन्तान नहीं हुई इसलिए जेबर की बड़ी पत्नी बाछल ने भगवान विष्णु की 12 वर्ष तक पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या की। परन्तु जब उसे कोई सफलता नहीं मिली तो उसने ब्रह्मा की पूजा करना आरम्भ कर दी। परन्तु उसे निराशा ही हाथ लगी और उसने शिव भगवान की पूजा करना आरम्भ कर दी। कहा जाता है कि शीघ्र ही शिव अवतार गुरू गोरख नाथ ने अपने असंख्य शिष्यों के साथ मारूदेश की यात्रा की। अपनी मरूदेश की यात्रा के दौरान उन्होंने मारूदेश के शासक जेबर के बाग में डेरा डाल दिया। हलांकि बाग 12 वर्ष के दुर्भिक्ष के कारण सूखा पड़ा था परन्तु गुरू गोरख के चार बार शंख नाद करने के कारण भारी वर्षा हुई जिसके कारण बाग हरा भरा हो गया। एक दिन गुरू गोरख नाथ का एक शिष्य जब राजा के महलों में भिक्षा मांगने गया तो बाछल ने भिक्षा पात्र फलों मिठाईयों तथा अनाज से भरकर अपने बांझपन के बारे में गुरू गोरख नाथ के शिष्य को बताया। शिष्य को जब ये पता चला कि बाछल शिव की भक्त है तो वह उससे बहुत प्रभावित हुआ और उसने रानी बाछल की सारी व्यथा कथा गुरू गोरख नाथ को बता दी व गुरू गोरख नाथ जी से रानी को पुत्र वरदान देने की प्रार्थना की। बाछल की शिव भक्ति तथा शिव आस्था से प्रसन्न होकर गुय

गोरख नाथ ने अगले दिन बाछल को अपने पास बुलाया और कहा कि तुम्हें मनचाहा वरदान मिलेगा। बाछल की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा और उसने सारी बात राजा को बता दी। बाछल की दूसरी बहन काछल ने सारी बातें छुपकर सुन ली और वह अगले दिन बाछल के कपड़े पहनकर उससे पहले ही गुरू गोरख नाथ के पास चली गई गुरू गोरख नाथ ने उसे जौ के दो बीज दिए जिससे काछल को दो बेटे पैदा हुए जिनका नाम बाद में अर्जुन सुर्जन पड़ा। बाछल को जब पता चला कि उसकी बहन ने उसे धोखा दिया है तो उसने उसे बहुत कोसा और उसने सारी बात गुरू गोरख नाथ जी से बाता दी। गुरू गोरख नाथ ने उसे भी एक फल खाने को दिया जिसके फलस्वरूप गूगा का जन्म हुआ। गुरू गोरखनाथ ने बाछल को फल देते वक्त बताया था कि आपके घर जो बेटा जन्म लेगा वह सांपों के काटे लोगों का इलाज करने में सहायक होगा तथा वीर योद्धा के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा।

स्थानीय भाषा में गूग्गा को गुग्गा जाहरपीर गुग्गा राणा गुग्गापीर लखदाता आदि नामों से जाना जाता है। हमीरपुर में लहड़ा गलोड़ का गुग्गा मन्दिर सबसे प्रसिद्ध स्थान है जो कि हमीरपुर जिला से लगभग 22 कि॰ मी॰ दूर स्थित है। इस मन्दिर में जिले भर के लोग श्रद्धा पूर्वक यात्रा करते हैं तथा वहीं स्थित पुजारी सांपदंश का इलाज करता है। इस लहड़ा गलोड़ की मान्यता उत्तर प्रदेश पंजाब तक फैली हुई है। यहां हर बड़े रविवार को मेला भी लगता है।

दियोट सिद्ध बाबा बालक नाथ मेला

यह मेला बाबा दयोटसिद्ध से सम्बन्ध रखता है। दयोटसिद्ध कालान्तर से एक धार्मिक तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। बाबा दियोटसिद्ध का मन्दिर जिला हमीरपुर में स्थित है। यह हमीरपुर जनपद से लगभग 40 कि॰ मी॰ की दूरी पर स्थित है। यह बिलासपुर और हमीरपुर सीमा पर शाहतलाई से मात्र 5 कि॰ मी॰ पहाड़ी पर चकमोह स्थान पर है। यह स्थल दूर-2 तक भक्तों के लिए आकर्षक स्थल है। कहा जाता है कि धौलागिरि पर्वत जहां बाबा जी की पवित्र गुफा और तपस्या का स्थान है वहां पर बाबा जी के नाम का दीपक जलाया जाता था जो कि दूर-2 से दिखाई देता था। इसके कारण इस स्थान का नाम द्धियोटसिद्ध पड़ा। बाबा बालक नाथ जी के जन्म से सम्बन्धित प्रचलित कथा का वर्णन इस प्रकार है।

लोहड़ी त्योहार

हमीरपुर जिला में मनाए जाने वाले त्योहारों में लोहड़ी त्योहार का भी महत्वपूर्ण स्थान है। कांगड़ा जिला के साथ-2 हमीरपुर जिला में त्यौहार के रूप में भी मनाया जाता है। यह त्यौहार माघ महीने की पहली तिथि को मनाया जाता है। हमीरपुर क्षेत्र मं इस त्यौहार से पूर्व 8.10 दिन पहले ग्रामीण क्षेत्रों मं लड़के तथा लड़कियां लोहड़ी मांगने घर-घर जाते हैं। इस त्योहार पर लड़कों द्वारा गाई जाने वाली लोहड़ी इस प्रकार है:

आमीयां भई आमीयां नीरू कणकां जामियांए

कणकां पये भठेरे दो साधु मेरे

साधु गये घा नू घा होया थोड़ा

अग्गे मिलया घोड़े पर काठी

जियो मेरा हाथी हाथिएं फिचके दंद

पहला राजा गोपी चन्द

गोपी चन्दे पकाईयां रोटियां दो-2 अंगुल मोटियां

खाने वाले खा गये वाके सारे रह गए।

अर्थात् लोहड़ी का त्यौहार आया है खेतों में हरी-भरी गेहूं उग आई है। गेहूं में वटेर नाम का पक्षी पड़ गया है इत्यादि।

इस पावन त्यौहार पर तरह-2 के पकवान पकाये जाते हैं। विवाहित लड़कियां अपने-2 मायके जाती हैं। उन्हें मायके द्वारा लोहड़ी के पर्व पर न्यौता दिया जाता है। माघ महीने की पहली तिथि की शाम को लोग रेवड़ियां तिल चावल गुड़ मूंगफली व घी डाल कर विशेष पकवान बनाया जाता है। जिसे तिलचैली के नाम से जाना जाता है। लोहड़ी मांगने आए बच्चों को तिल चैली मूंगफली व गुड़ और मूंगफली से बनी गचक व पैसे दान में दिए जाते हैं।

रली पूजन त्योहार

'रली पूजन हमीरपुर क्षेत्र मं प्रचलित अन्य पर्वों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'रली का पूजन हमीरपुर और कांगड़ा दोनों जिलों में मनाया जाता है। लड़कियां 'रली ;शिव पार्वती) का व्रत एक महीने तक रखती हैं। यह व्रत चैत्र (मार्च) मास के नवरात्रों से आरम्भ होता है। लड़कियां अच्छे वर की कामना के उद्देश्य से व्रत रखती हैं। इस दिन लड़कियां चारपाई पर न सोकर भूमि पर सोती हैं। व्रत रखने वाली लड़कियां केवल दिन में एक ही समय शाम को पूजा करने के पश्चात् भोजन करती हैं। 'रली' पूजा अनेक प्रकार की गाथा गाकर की जाती है जो इस प्रकार है:-

सब-सब सहेलियां मेरी बिबो जुड़ी गुड़ी आया ओ

जुड़ी मुड़ी आया ओ।

रलिये सुहेलड़ थिनार दूरों चली करी आई ओ

होरां ता चुगलियां मेरी बिबो

चड़ियां चड़ोलिया चड़ोलिया चड़ी आई मेरी बिबो

होरां ता चुगियां लामी गोद मेरी बिबो

होरां ता गुंद लैयां दो-दो गुतां मेरी बिबो

रलियां ता गुंदा बीबो चैसर हार मेरी बिबो

गुंदी ता गुंदी बीबो चार लड़ियां बाड़ा हारा

किंला धारियां मेरी बिबो

लैणे वाला शंकर दार मेरी बिबो

नला मेरी बीबे

रलिया सुख्या ता हार शंकर दे लई मेरी बिबो।

अर्थात् ओ रली हम सभी सखियां इकट्ठी होकर आ गई हैं। कुछ सखियों ने फूल अपने प्रियजनों को टोकरियों मं चुग लिए हैं जबकि रली ने फूल पल्ले में इकट्ठे किए हैं। कुछ सखियों ने दो लड़ियों के हार बनाए हैं जबकि रली ने चार लड़ियों वाला हार शंकर के लिए बनाया है। लेकिन वे तो उससे बहुत दूर हैं।

बसोआ अथवा रली को त्यौहार के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन लोग अनेक प्रकार के मीठे पकवान बनाते हैं। लोग इस दिन गसोताए मारकण्डा आदि पवित्र स्थानों पर स्नान करते हैं। इन स्थानों पर मेला भी लगता है। इस प्रकार यह गाथा हमारे समाज की सांस्कृतिक एकता व धार्मिक रीति-रिवाजों को दर्शाती है और समाज के विभिन्न वर्गा में एकता चेतना व शक्ति प्रदान करती है।

शनिदेव मेला लम्बलू

भगवती पार्वती की क्रीड़ा स्थली की सुरम्य धौलाधार पर्वत शृंखला की वादियों मं हमीरपुर जनपद में लम्बलू एक छोटा-सा कस्बा है जो कि हमीरपुर जिले से लगभग 10 कि.मी. दूरी पर स्थित है। यह लगभग 2000 की आबादी लिए हुए हिमाचल प्रदेशए पंजाब तथा जम्मू कश्मीर के लोगों को अपनी ओर अन्यायास ही आकर्षित कर रहा है। उत्तरी भारत का शनिदेव महाराज का यहां प्रथम विशाल मन्दिर है जिसमें हर शनिवार को लोगों का मेला लगता है। प्रत्येक मास के ज्येष्ठ शनिवार को इस स्थान पर हजारों लोग अपनी मनोकामना को पूर्ण करने हेतु तथा शनिदेव महाराजा के दर्शन के लिए आते हैं। जैसे-2 श्रद्धालुओं पर शनिदेव की कृपा हो रही है यहां का प्रचार भी बढ़ रहा है। नवग्रहों में शनिदेव सबसे ज्यादा दुखदायी व प्रकोपी ग्रह है। शनि की महादशा दशा अन्तर प्रत्यंतर ढैया साढ़सती अति कष्टकारक व प्राणघातक होती है। परन्तु यदि विधि के साथ शनिदेव शान्ति जाप महामृत्युंजय जप तोला कराया जाए तो शनि देव प्रसन्न होकर अपने भक्तों को धन-धान्य से मालामाल कर देते हैं। बाहर से आने वाले श्रद्धालु शनि महाराज को बाबा के नाम से पुकारते हैं। यहां मौजूद मन्दिर 1999 ई. में अस्तित्व में आया तथा शनि कृपा और श्रद्धालुओं की आस्था और श्रद्धा की भावना से किए गए दान से मन्दिर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। लोगों का शनिदेव महाराज पर कितना विश्वास व श्रद्धा है वह इस गीत से पता चलता है। गीत इस प्रकार है:-

लम्बलू दा मन्दर बड़ा प्यारा

मन्दिरा च तेरे दीवा चढ़दा दीवे बीच तेल आसां पाणा

मन्दरा च तेरे ढोल जे बजदा

दर तेरे नचणा ते गाणा

लम्बलू दा मन्दर बड़ा प्यारा

मन्दर तेरी मूरत सजदी रज दर्शन आसां पाणा

रल मिल के आसां दर तेरे औणा दुःख तां क्लेश मटाणा

अर्थ:- इस गीत में बताया जाता है कि लम्बलू का मन्दिर बड़ा प्यारा है और सबसे न्यारा है। मन्दिर में दीवा रखा है उसमें तेल डालने जाना है। शनि के मन्दिर में ढोल बजते हैं। वहां पर हमने नाचना और गाना है। रल-मिलके हमने शनिदेव के मन्दिर जाना है तथा शनिदेव के दर्शन करके दुख और क्लेश मिटाना है।

राजा भरथरी जगराता त्यौहार

राजा भरथरी की कथा हमीरपुर जनपद में सुनाई जाने वाली जन गाथाओं में प्रमुख हैं। राजा भरथरी की कहानी हमीरपुर जिला में नाटक जिसे स्थानीय भाषा में स्वांग या रास के नाम से जाना जाता है जोकि लोगों के मनोरंजन का प्रमुख साधन है। इस से सम्बन्धित कथा इस प्रकार से है:-

राजा भर्तृहरि उज्जैन के लोकप्रिय राजा थे। उन्हें अपनी रानी पिंगला से बहुत प्रेम था। एक बार राजा शिकार खेलने गए। उन्होंने महलों में रानी तक यह समाचार पहंचा दिया कि राजा को जंग में एक शेर ने मार दिया। यह दुखद समाचार सुनकर रानी पिंगला सचमुच महल से छलांग लगाकर मर गई। तब राजा भर्तृहरी अपने किए पर बहुत पछताया। जैसे शिव ने सती की लाश कंधे पर उठा ली थी और वह उसका दाह संस्कार न करने देते थे उसी प्रकार भर्तृहरी पिंगला के लिए दुखी हुए। संयोगवश उसी दिन गुरू गोरख नाथ जी भी उज्जैन पधारे। उन्होंने अपने प्रभावशाली उपदेश द्वारा राजा को लाश जलाने के लिए राजी कर लिया और अपने योगबल से उसे यह बात समझा दी कि इस पार्थिव शरीर में अब कुछ नहीं। पिंगला की आत्मा दूसरा शरीर धारण कर चुकी है। उसका जन्म सूधौवर देश के राजा की कन्या के रूप में हो चुका है। वहां पर वह भिरमा के नाम से प्रसिद्ध होगी।

आखिर में बहुत वर्षो बाद मां सम्बन्धियों तथा मन्त्रियों के समझाने बुझाने पर राजा ने एक अन्य सुन्दर रानी चैदश से विवाह कर लिया। निःसन्देह वह उसके सौन्दर्य से बहुत प्रभावित हुए। एक बार प्रसन्न होकर गुरू गोरखनाथ ने उन्हें एक अमरफल दिया। परन्तु चैदश की सुन्दरता का जादू उन पर इतना चढ़ गया था कि वह फल स्वयं न खाकर राजा ने उसे दे दिया। परन्तु राजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वही फल कई दिनों बाद भरी सभा में उनकी दरबारी नर्तकी ने राज-भक्ति का परिचय देते हुए उन्हें भेंट किया। काफी जांच करने के बाद राजा पर यह रहस्य खुला कि उनकी सुन्दर रानी उनके एक बजीर के सुन्दर पुत्र पर मरती है। बजीर के सुपुत्र की पत्नी किसी सैन्यधिकारी से सम्बन्ध स्थापित किए हुए है और इस मोहजाल के चक्कर में वह अमरफल कई हाथों से गुजरता हुआ अन्त में उसके वास्तविक पात्र स्वयं राजा तक पहंचा।

राजा के हृदय पर गहरी चोट लगी। उन्हें जीवन से ही वैराग्य हो गयाए वह अमरफल उन्होंने उसी समय खुद खाया। कुछ दिनों बार स्वयं सन्यास धारण कर राज्य अपने छोटे भाई विक्रमादित्य को सौंप दिया। अपनी बूढ़ी मां रानी तथा सम्बन्धियों और प्रजा को रोता छोड़कर वह घर से जंगल की ओर निकल गए। इस सन्यासी जीवन में उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। कहीं शेर और चीतेए कहीं डाकू और लुटेरे और कहीं निर्दयी शासकों की जेलें - जैसे अनेक कष्टों को सहते हुए अन्त में सुधौवर पहंुचने में सफल हुए। उन्होंने कई जगहों पर भिरमा की सुन्दरता की प्रशंसा सुनी थी। सुधौवर पहंुचकर गुरू गोरखनाथ की बात सत्य सिद्ध हुई। भिरमा ने विवाह के लिए शर्त लगा रखी थी कि जो कोई उसके प्रश्नों के ठीक उत्तर देगाए उसी से वह विवाह करेगी। भर्तृहरि से पहले उसे कोई पराजित न कर सका था। भर्तृहरी भिरमा के सामने पहुंचने मं सफल हो गए दोनों ने एक दूसरे के योग बल की परीक्षा ली। प्रश्नोत्तर हुए भर्तृहरी ने विजय प्राप्त की। रानी भिरमा ने भर्तृहरी के साथ विवाह कर लिया। कुछ दिनों फिर से गृहस्थ जीवन व्यतीत कर राजा भर्तहरी नाथपंथी योगियों के झुंड के संग चले गए।

होली का त्योहार व मेला

होली त्योहार व मेला दोनों रूपों में मनाया जाता है। होली का मेला हमीरपुर जिला के सुजानपुर टिहरा में मार्च मास में मनाया जाता है। इस मेले की शुरूआत राजा संसारचन्द ने की थी। होली का त्योहार सुजानपुर

क्षेत्र में ही नहीं मनाया जाता बल्कि पूरे देश में प्रसिद्ध है। यह सांस्कृतिक मेला है। होली का मेला ऐतिहासिक दृश्टि से बहुत की महत्वपूर्ण है। क्योंकि एक राजा जिसका नाम संसार चन्द था वह सुजानपुर के मैदान में अपनी जनता के साथ होती मनाया करते थे। इस दिन लोग घरों में पकवान बनाते हैं और एक-दूसरे पर रंग डालकर गले मिलते हैं । आपसी शत्रुता को भुलाकर गले मिलते हैं। यह त्योहार संास्कृतिक और सामाजिक दृश्टि से प्रदेश में अपनी पहचान बनाए हुए है। होली ऋतु त्योहार है। होली शरद ऋतु के आवसान का भी प्रतीक है। होली के दिन एकत्रित लकड़ियों को रात्रि में जलाकर होलिका दहन के पौराणिक संदर्भ को प्रासंगिक किया जाता है।

हरित तालिका

हरित तालिका त्योहार भाद्रपद अमावस्या के बाद तीसरे दिन यह त्योहार मनाया जाता है। यह स्त्रियों का त्योहार है। यह व्रत सबसे पहले माता पार्वती द्वारा भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए रखा गया था। यह व्रत औरतें अपने पती की रक्षा के लिए रखती हैं। लोक गाथा के अनुसार पार्वती ने शिव को प्राप्त करने के लिए भक्ति की। परन्तु उसे पिता हिमालय ने विश्णु से विवाह करने की तैयारियां कीं। तब माता पार्वती ने आत्महत्या की योजना बनाई परन्तु उसकी सहेली उसे चुपके से गुफा में ले गई। वहां शिवलिंग बनाकर शिवजी की पूजा कीा। शिवजी को पार्वती का पास गुफा में आकर विवाह की प्रतिज्ञा करने पड़ी। हिमालय पार्वती के पिता भी वहां आ गया। शिवजी के साथ पार्वती का विवाह करने को मान गया। इसलिए औरतें अपने पति की रक्षा और लम्बी आयु के लिए हरिततालिका का व्रत रखती हैं। इस त्योहार में शिव पार्वती की मिट्टी की मूर्तियां बनाकर साथ में पक्षियों की मूर्तियां बनाकर उनके रंग लगाकर पूजा की जाती है।

बाबा लखमीर दास जीः मेला सायर लदरौर बाबा लखमीर दास जी मन्दिर लदरौर कला स्थान में स्थित है। पहले इस जगह को कांगड़ा तथा कैहलूर (बिलासपुर) की सीमा से भी जाना जाता है। मान्यता यह है कि बाबा लखमीर दास जी 15वीं शताब्दी के आरम्भ में इस स्थान से घोड़े पर सवार होकर अपनी यात्रा के दौरान गांव लदरौर कंला से गुजर रहे थे। इस स्थान पर बरगद का एक विशाल पेड़ था जो आज गुरू की बड़ के नाम से प्रसिद्ध है। बाबा जी अपनी संगत के साथ यात्रा पर जा रहे थे तथा उनकी पगड़ी इस विशाल पेड़ की टहनियों के साथ फंस कर उलझ गई तो बाबा जी ने क्रोधित होकर इस पेड़ को श्राप दिया की तू सूख जा फिर ये हरा-भरा पेड़ सूख गया। तथा पशुओं में भी बिमारी फैलनी शुरू हो गई जब लोगों को इस घटना का पता चला तो सभी भयभीत हो गए और लोग बाबा जी का वापिस आने का इंतजार कने लगे बड़े दिनों बाद बाबा जी वापिस आये तो लोगों ने उन्हें रोक-कर प्रार्थना की कि इस बरगद के पेड़ को हरा भरा कर दे तो बाबा जी ने गांव के सारे लोगों को इकटठा किया और घर घर से दूध तथा गोबर से कर आए फिर बाबा जी ने इस स्थान पर अपना धूना लगाया तथा इस पेड़ के ऊपर गोबर का लेप लगा कर सफेद कपड़े से ढक दिया और कहा कि इसे पन्द्रह दिनों के बाद खोल दे जब पन्द्रह दिनों के बाद कपड़ा खोला तो इस में नई कोंपल आना शुरू हो गई। औरन बाबा जी ने कहा कि इस दिन को त्यौहार के रूप में मनाएं। तब से यहां पर सायर का मेला लग रहा है। यह मेला सदियों से होता आ रहा है। मन्दिर में बाबा जी की मूर्ति तथा पांच अति प्राचीन पिण्डिया स्थापित है। जिन की श्रद्धालू पूजा करते हैं।

सायर मेले से एक दिन पहले मन्दिर में रात को नगाड़ा (टमक) सारी रात बजाने की परम्परा प्राचीनकाल से यथावत आज तक जारी है। लोग इस परम्परा को निभाने के लिए आज भी दूर-दूर से टमक बजाने आते है। बाबा लखमरिदास मन्दिर की देख-रेख के लिए ग्रामीणों ने मन्दिर बना रखी है। तथा मन्दिर समिति मेले में बाहर से आए हुए व्यापारियों तथा श्रद्धालुओं के लिए तीन दिन लेकर आयोजन करती आ रही है। जिसमें

हजारों की संख्या में श्रद्धालु लंगर ग्रहण करते हैं। मन्दिर में हर साल अप्रैल महीने में गुरू पर्व मनाया जाता है। तथा भागवत कथा भी आयोजन किया जाता है। इसमें श्रद्धालु बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं और झण्डा लगाने की परम्परा को भी निभाते हैं। यह मेला एक धार्मिक मेला है। इस मेले में हजारों की संख्या में लोग भाग लेते है।

निष्कर्ष: हमीरपुर के मेले और त्योहारों का अपना ही एतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रहा है।यह मेले और त्यौहार व्यापारिक दृष्टी से भी काफी महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूचि

[1]. Samarika; Thakur Jagdev Chand Samriti Shod Sansthan, Neri, Hamirpur (Hamirpur, 2009)
[2]. With personal conversation with Sh. Nand Lal resident of Village Tal, Teh. Bhoranj, Distt. Hamipur (H.P.).
[3]. With personal conversation with Sh. Gnaga Ram resident of Vill. Sher, Teh. Bhoranj, Distt. Hamirpur (H.P.).
[4]. Satish Bassi; Kangra Darpan, (Kangra, 1991)
[5]. Jagmohan Balokhara; Himachal Ka Samanay Gyan, (Delhi, 1994)
[6]. Om Gupta; Kangra Harday Samrat Maharaja Sansar Chand, (Kangra, 2006)
[7]. Personal Interview with Sh. Om Parkash Sharma, V.P.O. Lambloo, Distt. Hamirpur, Himachal Pradesh.
[8]. Hari Ram Jasta; Parvaton Ki Goonj, (Delhi, 1984)
[9]. Dev Raj Sharma; Gugga Gatha Sarvmany Devta Ki Katha; (Delhi, 2006)
[10]. B.R. Sharma; Status of Our Union Himachal Pradesh, (Delhi, 1987)
[11]. Personal Conversation witht Bidhi Chand, V.P.O. Bahanwin, Teh. Bhoranj, Distt. Hamirpur (H.P.)
[12]. Shanti Kumar Syal; Devmala Ka Himachal, (Delhi, 1977)
[13]. Jagmohan Balokhara; Wonderland Himachal Pradesh, (Delhi, 1995),
[14]. Personal conversation with Nidhi, Vill. Bharthwan, P.O. Bahanwin, Distt. Hamirpur (H.P.)
[15]. Personal conversation with Manish Kumar, Vill. Ghujani, P.o. Dhanwin, Distt. Hamirpur (H.P.)
[16]. Personal conversation with Sunita Kumari, Vill. Damshal, P.O. Ladhore, Distt. Hamirpur (H.P.)
[17]. Personal conversation with Karuna, Vill. Bhohar, P.O. Ladahare, Distt. Hamirpur (H.P.)
[18]. Personal Conversation with Jagdish, V.P.O. Lambloo, Distt. Hamirpur (H.P.)
[19]. Personal conversation with Pushpa Devi, V.P.O. Lambloo, Distt. Hamirpur (H.P.)
[20]. Hari Ram Jasta; Parvto Ki Gunj, (Delhi, 1984)
[21]. Personal Conversation with Sh. Bidhi Ram, Vill. Nadoh, Teh. Bhoranj, Distt. Hamirpur, (H.P.).
[22]. Personal Interview Sh. Vijay Kumar, Pardhan Mandir Committee, Baba Lakhamir Das Ji.